



D-629

DIAMOND COMICS

Rs. 6.00

पिक्कलू



और

शीशे का घर

visit - encyclopedia of Indian Comics
<http://indian-comics.awardspace.com>
©2007, Anupam Agrawal





शीशे का घर

अरे, रम्पू! तू तो मकान के अंदर बैठा भी बाहर से दिखाई दे रहा है!



ढोंढ़! मैंने यह शीशे का घर बनाया है. इसके अंदर रखी हुई हर चीज बाहर से दिखेगी.



अरे, हां! यह तो सचमुच बड़ी लाजवाब चीज है

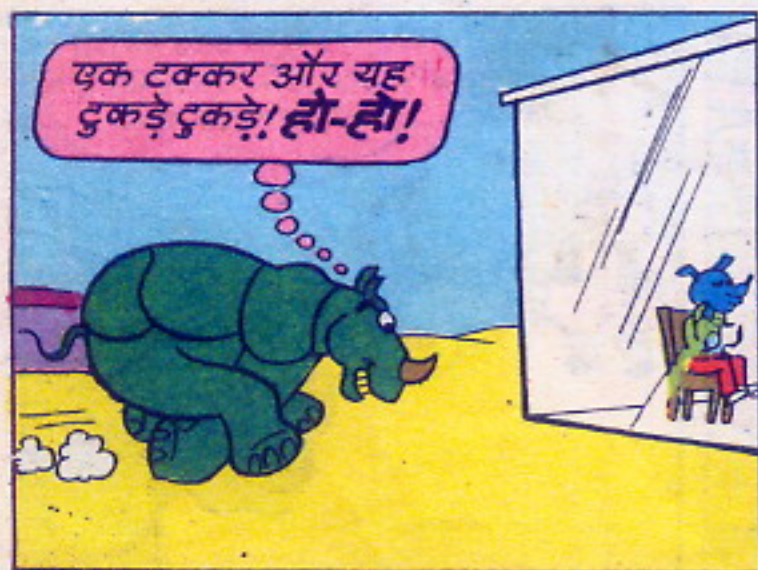
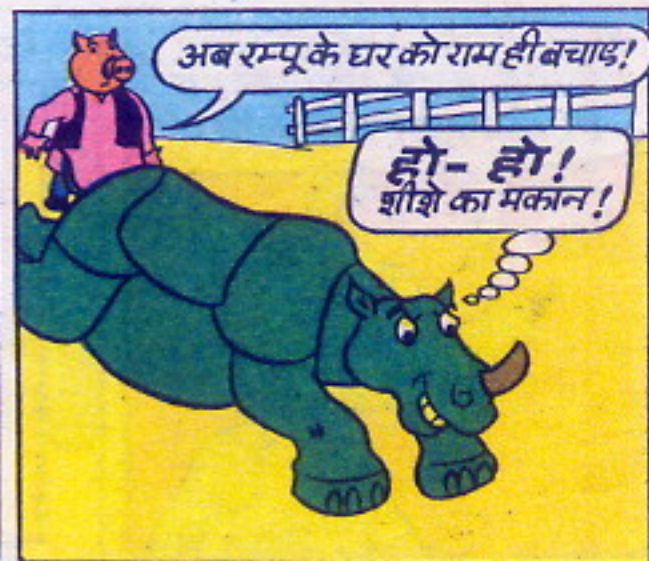
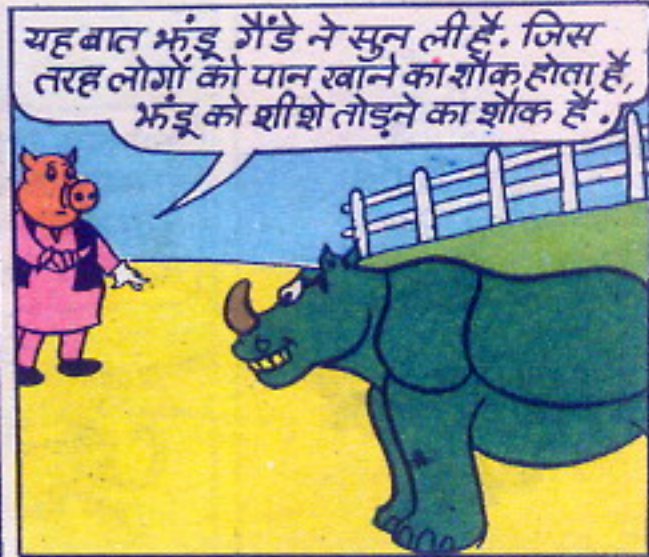
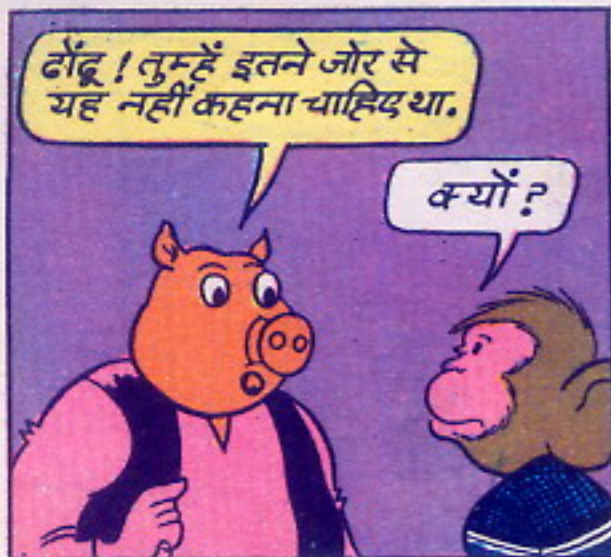


मैं इस नायाब चीज के बारे में सब दोस्तों को बताता हूँ.



ढपोर! रम्पू ने शीशे का मकान बनाया है, उसके आर-पार सब कुछ दिखता है







और पिकलू ने शीशे का मकान फिर तैयार कर दिया.

भंडू को खबर हो गई होगी, वह किसी भी पल इसे तोड़ने के लिए आता होगा.



हो! हो! फिर से शीशे का मकान! एक सैकंड में यह ढेर हो जायगा.

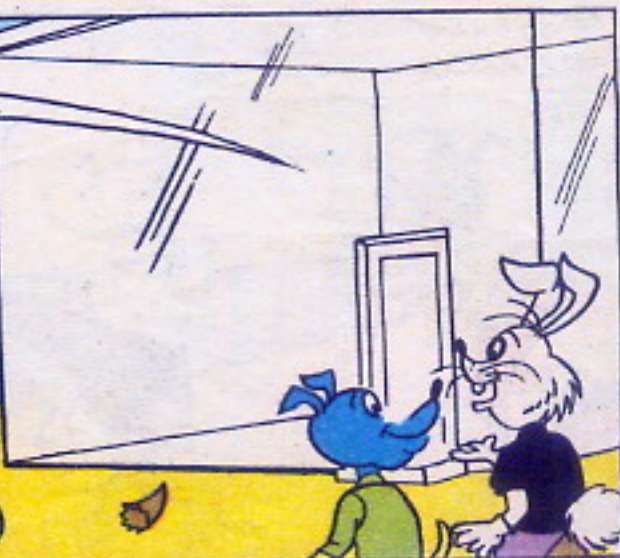
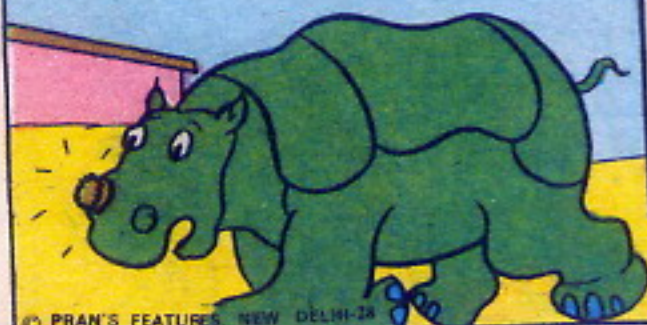


हाय, मेरा सींग!

भंडू अब किसी शीशे को टक्कर नहीं मारेगा.



अब की बार मैंने यह मकान बुलेट प्रूफ शीशे का बनाया था, जिसे बंदूक की गोली भी नहीं भेद सकती.





पिकलू का चश्मा

रम्पू ने कहा था कि स्कूल से धुट्टी होते ही आ जाना, दोनों खेलेंगे.



देखूँ, पिकलू आ रहा है या नहीं. नजदीक दिखाई नहीं दे रहा.

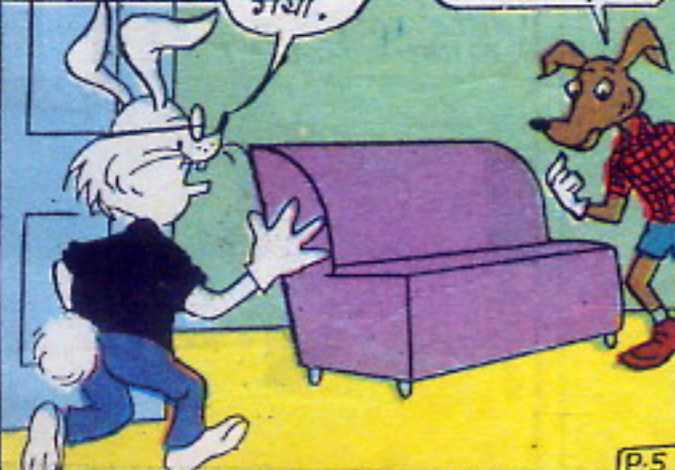


उसके आने तक बैठ कर नाश्ता किया जाय.



रम्पू! तुमने खेलने के लिए बुलाया था. मैं आ गया.

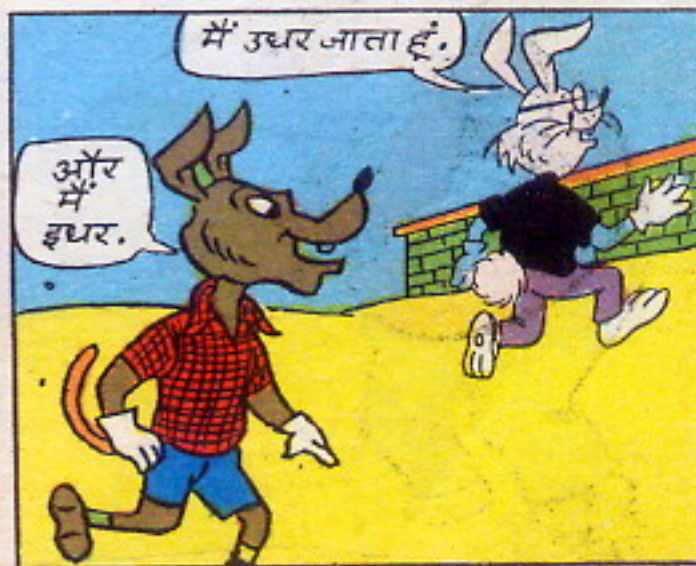
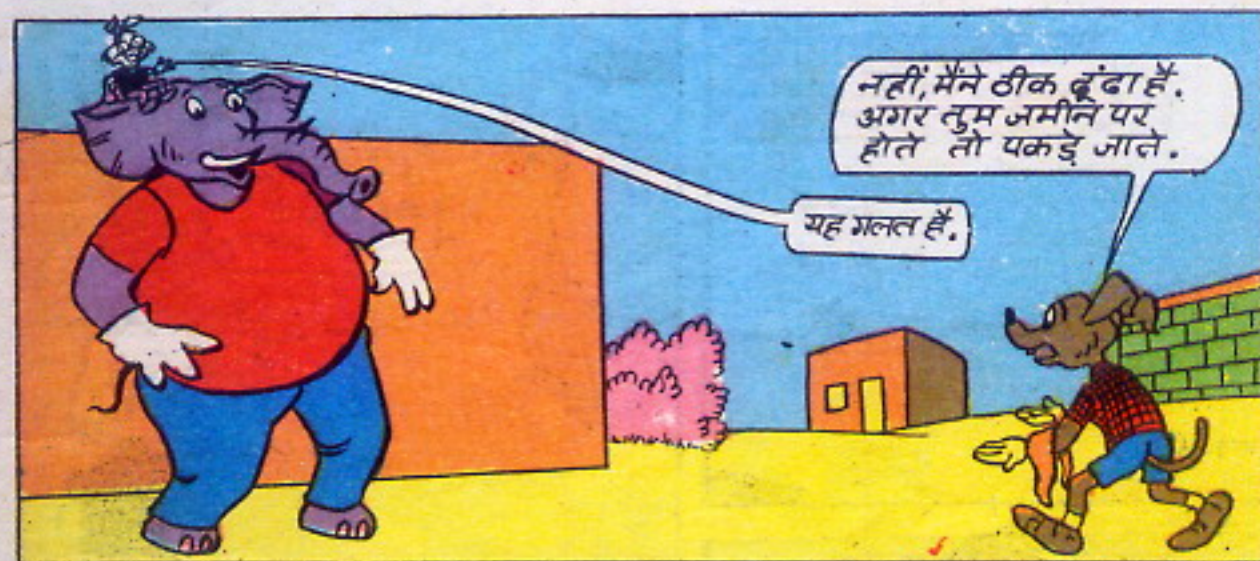
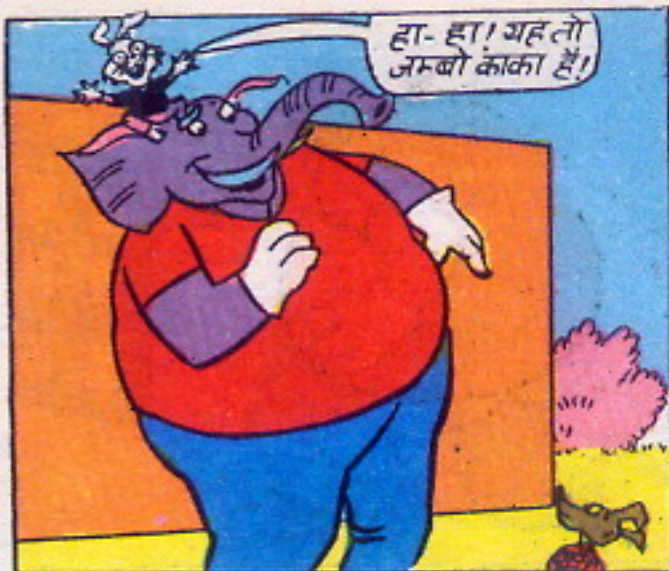
लेकिन क्या खेलेंगे?

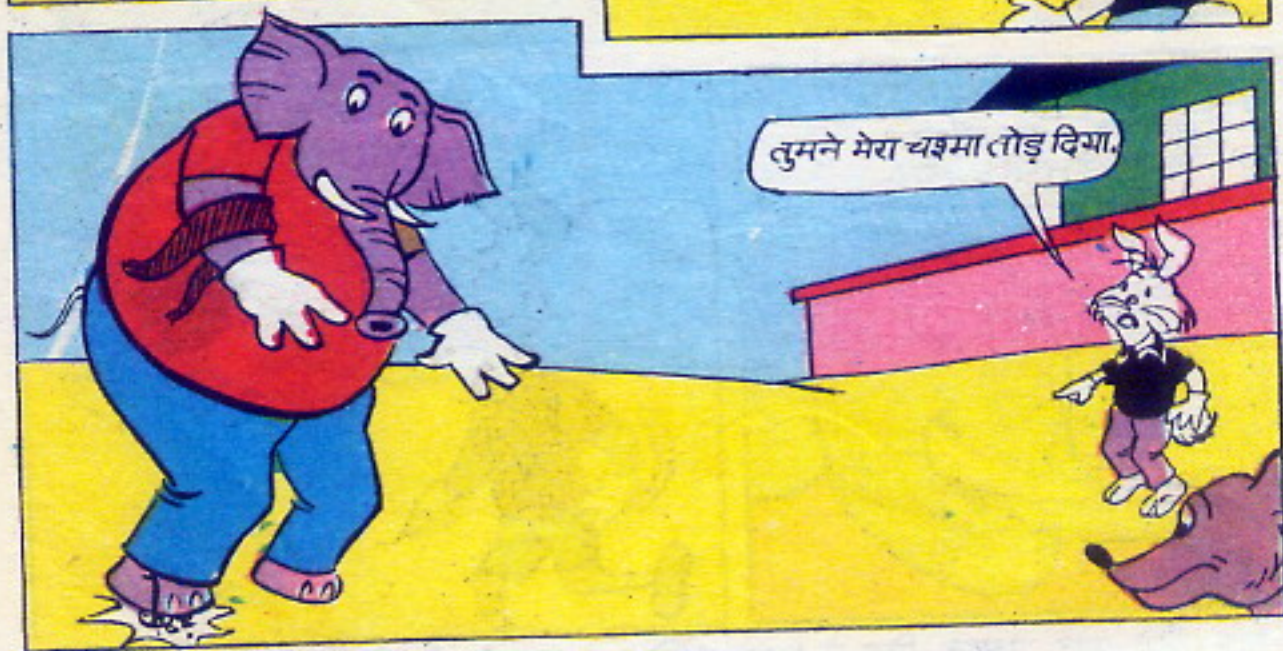
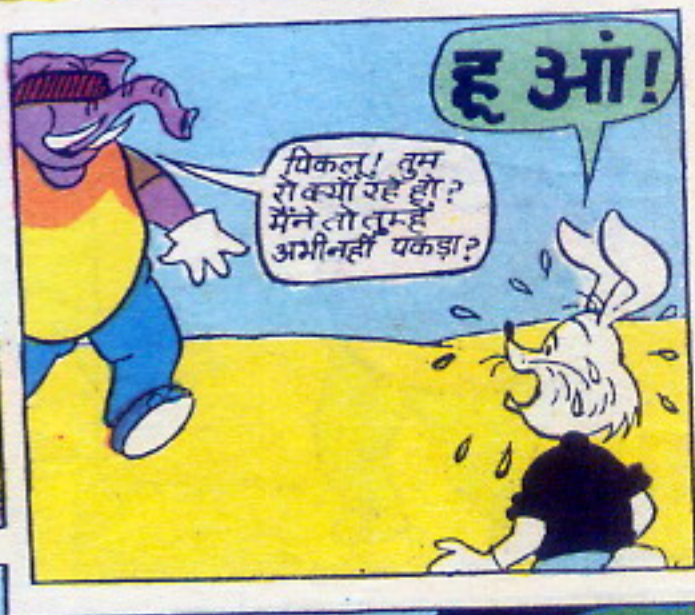
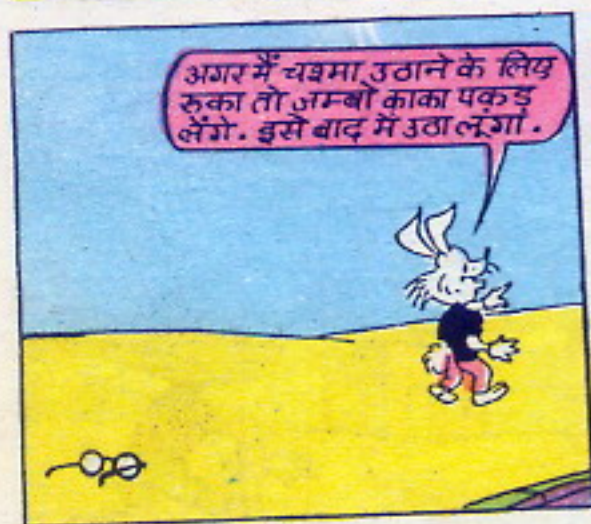
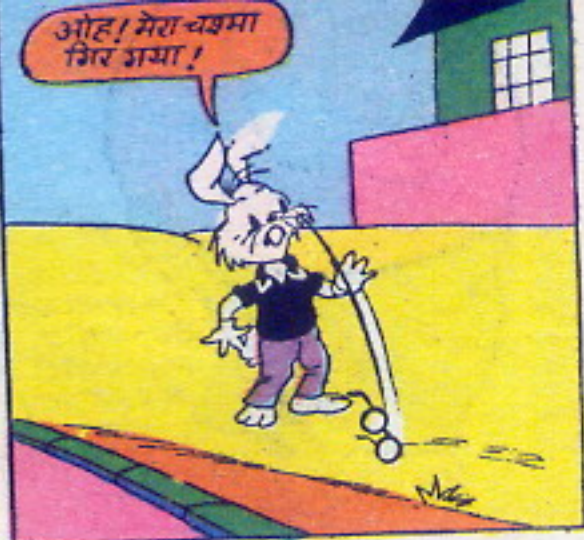
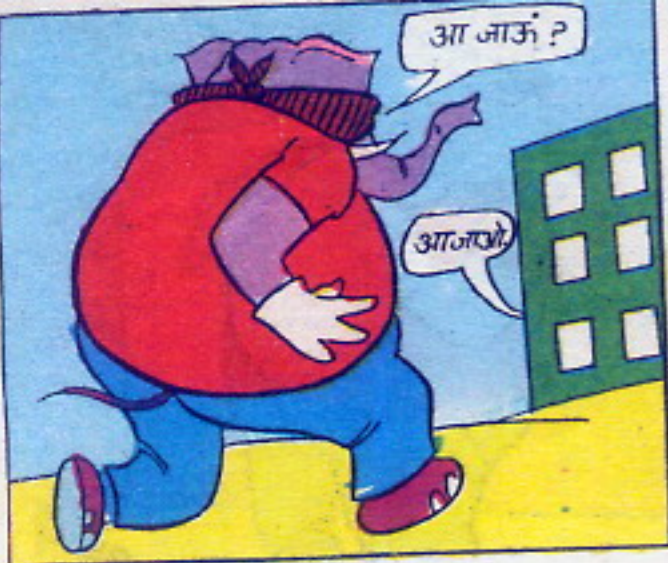


कैरम कैसा रहेगा?











**गन्ना और
जम्बो**

अहा, गन्ना!

वाह! गन्ना!



रम्पू! यह
गन्ना मेरा है.



नहीं, पिकलू! पहले
गन्ना मेरे हाथ में आना.

लड़ना ठीक नहीं. गन्ने के दो
टुकड़े करते हैं. एक-एक टुकड़ा बाँट लेंगे.

अच्छा आइडिया है.
इसे बीच में से तोड़ो.



आ...आह! पूरी
ताकत लगा दी.



रम्पू ! मुझसे तो गन्ना दूटा नहीं.
अब तुम ताकत आजमा कर देखो .

जब तुमसे ही नहीं दूटा तो
यह मुझसे क्या दूटेगा ?

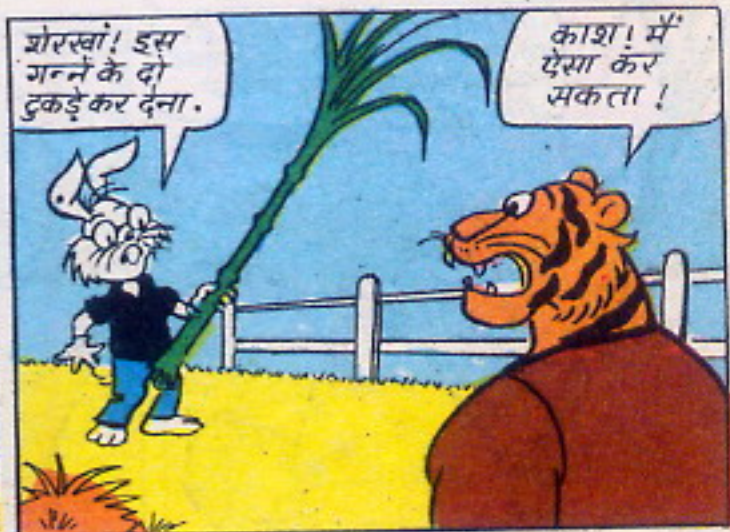
ठहरो ! मैं इसके दो
टुकड़े करवा
कर लाता हूँ .

दोंदू ! क्या तुम्हारे
पास चाकू है ?
मुझे गन्ना काटना
है ?

पिकल ! अगर चाकू होता तो मैं यह
खरबूजा काटकर कभी का खा चुका होता .

कोई बात नहीं . मैं इसे
किसी और से काटवा लूंगा .

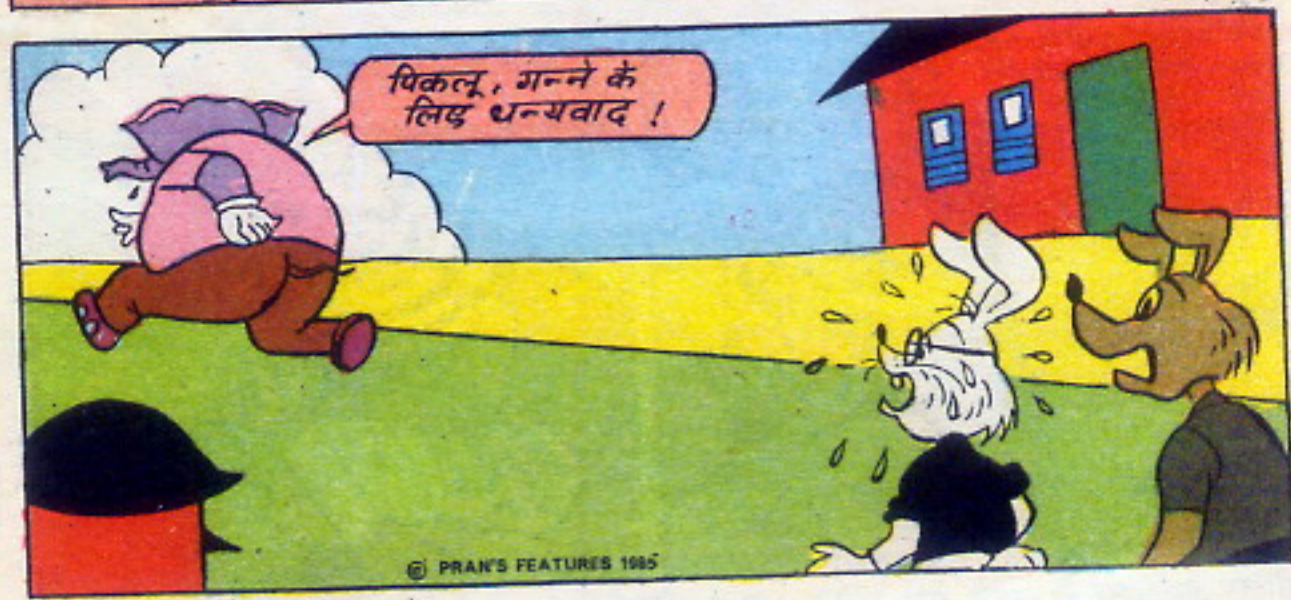
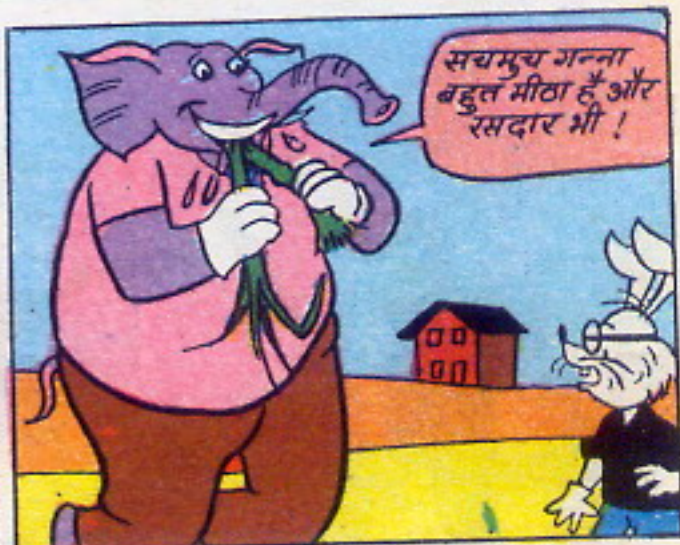
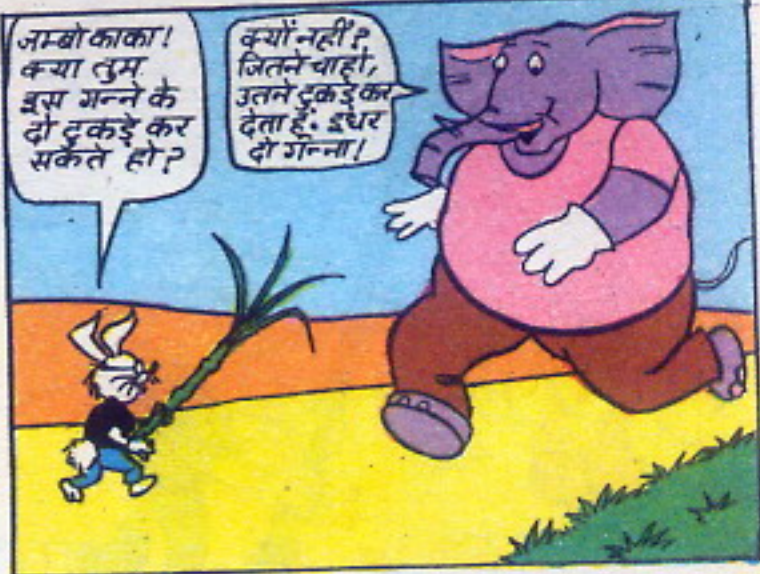
चाकू मिल जाय तो
मुझे भी दे देना .





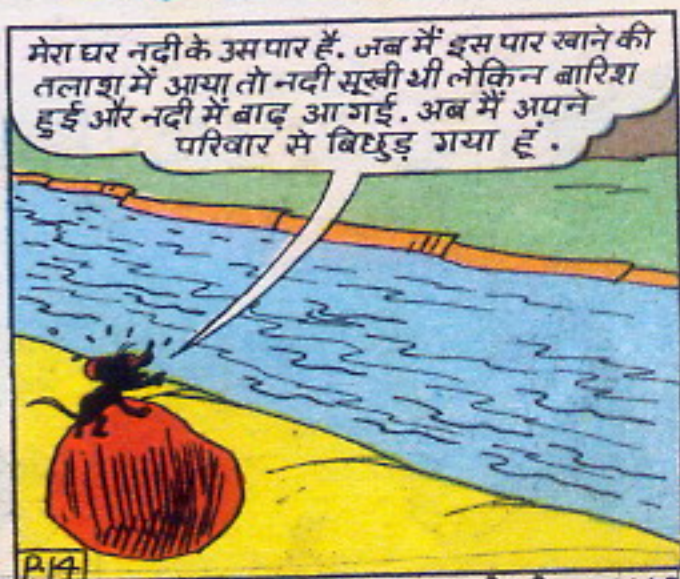
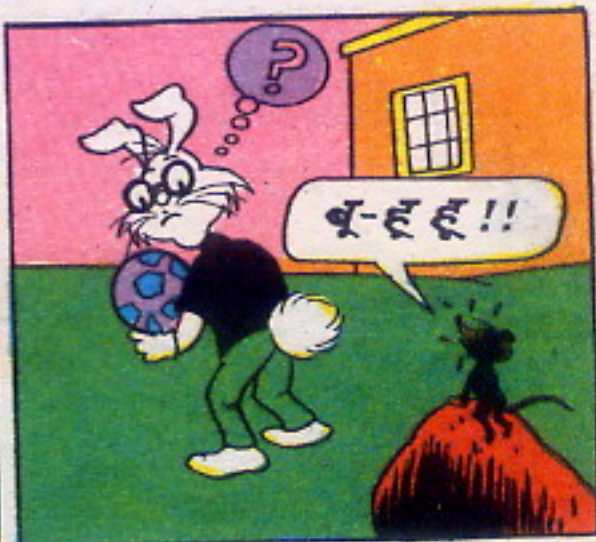
जम्बो काका!
क्या तुम
इस गन्ने के
दो टुकड़े कर
सकते हो?

क्यों नहीं?
जितने चाही,
उतने टुकड़े कर
देता हूँ. इधर
दो गन्ना!





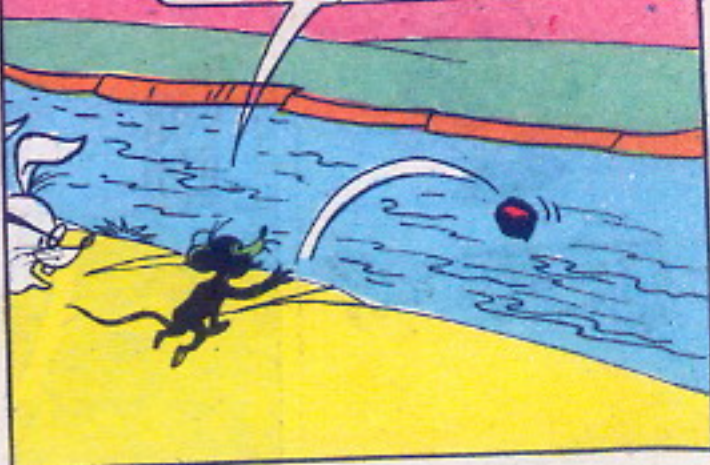
चूहे का घर



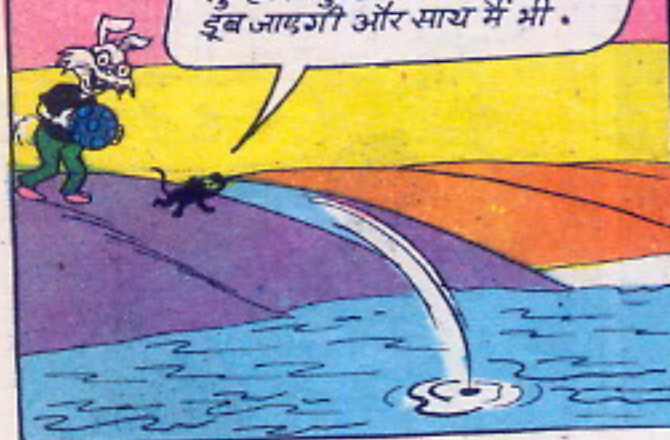
फिक्र न करो.
इस फुटबाल
पर बैठ कर
तुम नदी पार
कर सकते हो.



इससे कुछ नहीं होगा. मैंने
कई पत्थर नदी में फेंके ...



और सब डूब गए. इसी तरह
तुम्हारी फुटबाल भी पानी में
डूब जायेगी और साथ में भी.



नहीं, विज्ञान का सिद्धांत है कि भारी चीज
पानी में डूब जाती हैं, हल्की तैरती रहती हैं.
इस फुटबाल में हवा भरी है जो पानी से हल्की
होती है. इस
लिए यह
तैरता रहेगा.

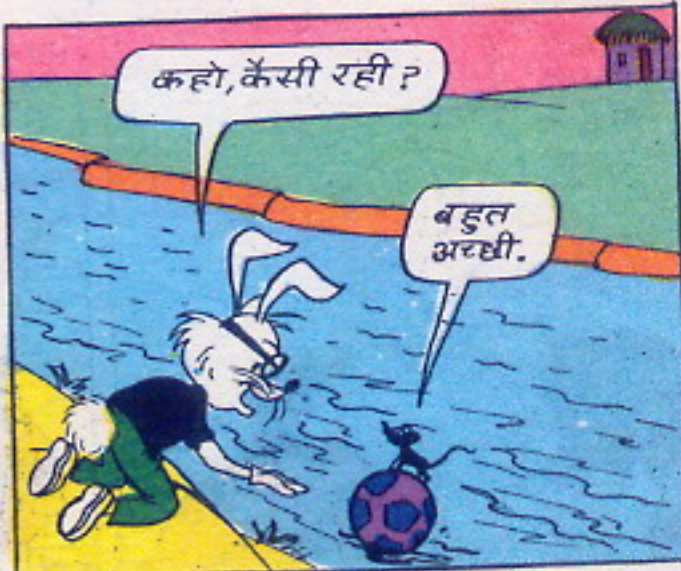


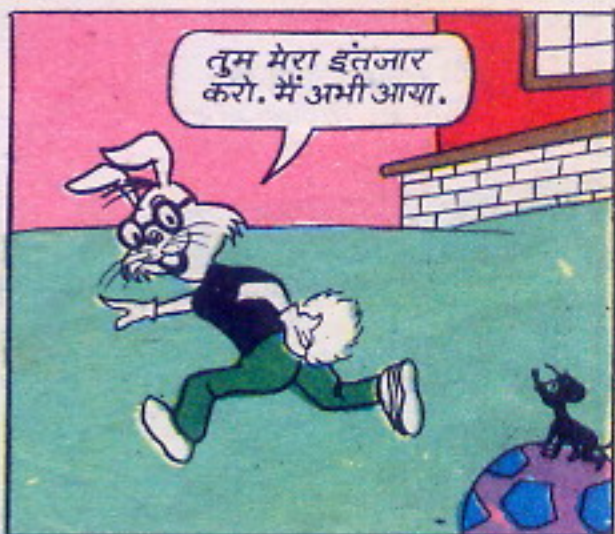
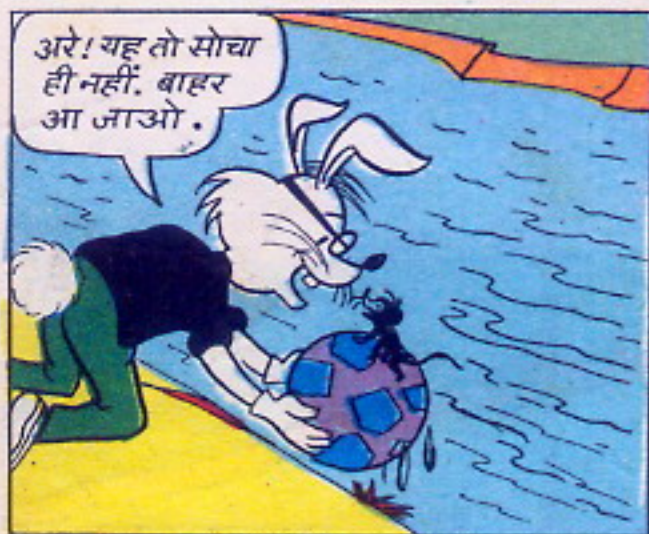
आओ, इस
पर बैठ जाओ.



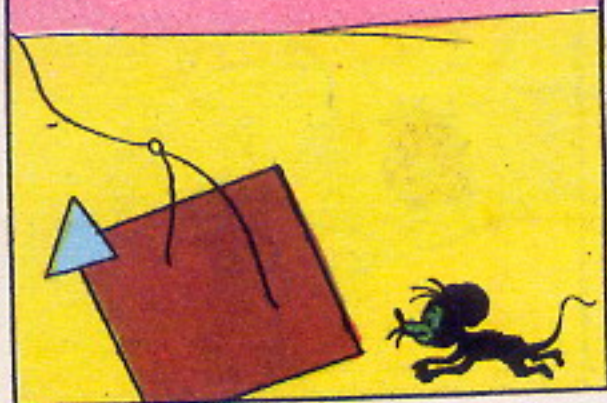
कहो, कैसी रही ?

बहुत
अच्छी.



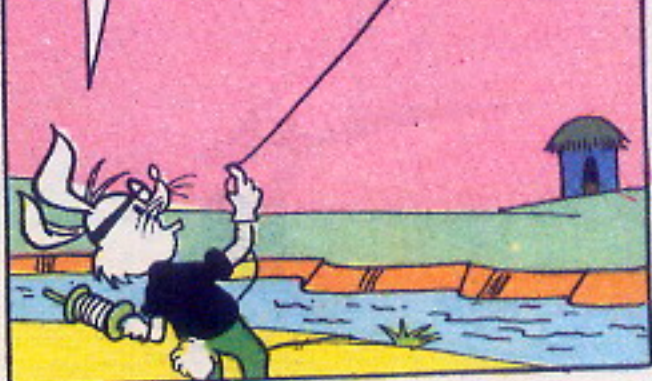


अभी देखते हैं. तुम
पतंग पर बैठ जाओ !

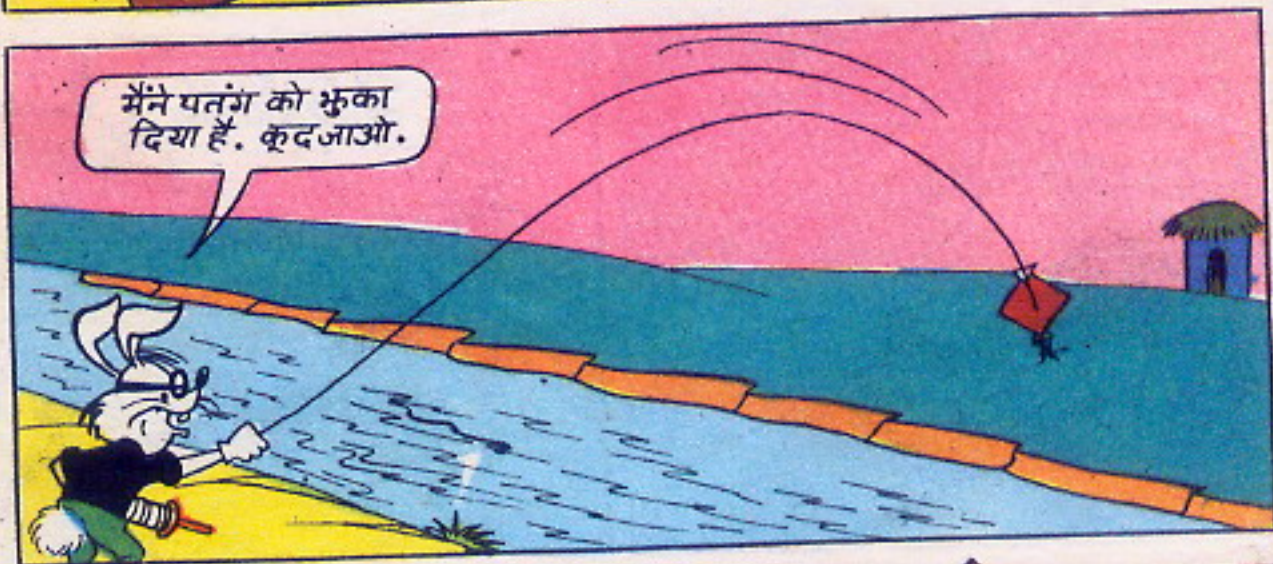


कहो,
कैसी
रही ?

वाह!



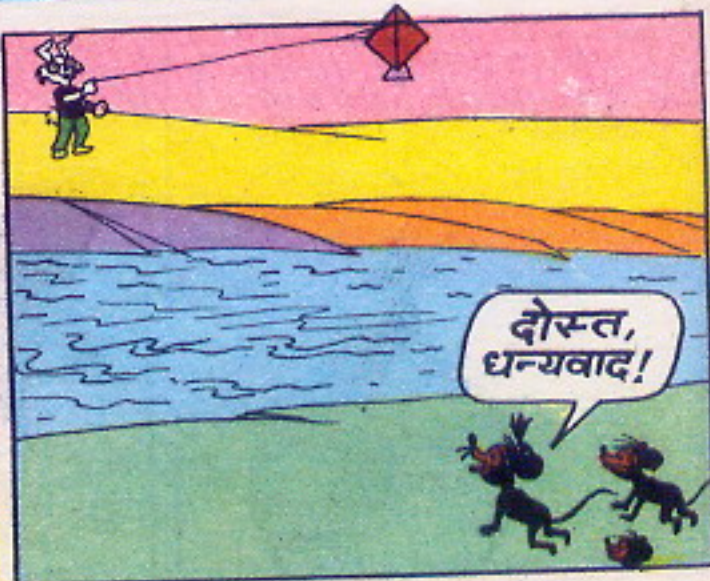
मैंने पतंग को भुका
दिया है. कूद जाओ.



हिय-हिय-हुर्रे!



दोस्त,
धन्यवाद!





अपनी पूंछ

पिकलू! देखो, मेरी पूंछ कितनी सुन्दर है.

टोंटू! गोल पूंछ ज्यादा सुन्दर होती है, जैसी मेरी.



और मेरी लहराती बुलायम पूंछ न सिर्फ खूबसूरत है बल्कि पंखों की तरह हवा भी करती है.



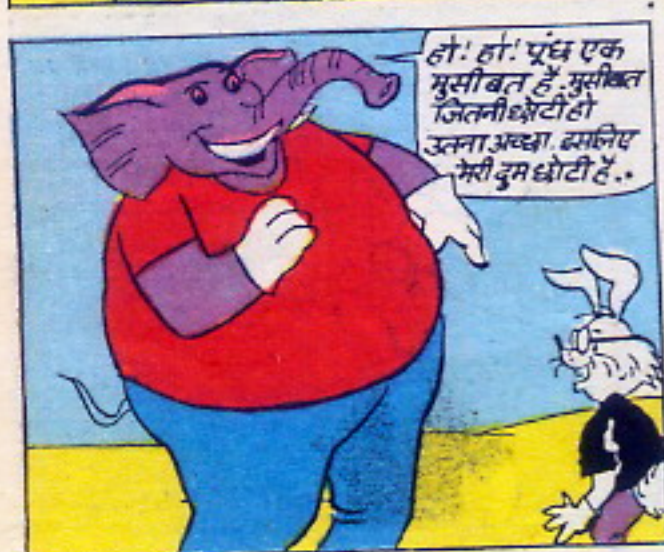
उठरो! एक पूंछ सम्मेलन करते हैं. जिसकी पूंछ सबसे अच्छी होगी उसे राजा घोषित करेंगे.



पूंछ सम्मेलन

और सम्मेलन में भाग लेने के लिए दूर दूर से उम्मीदवार आने शुरू हो गए.

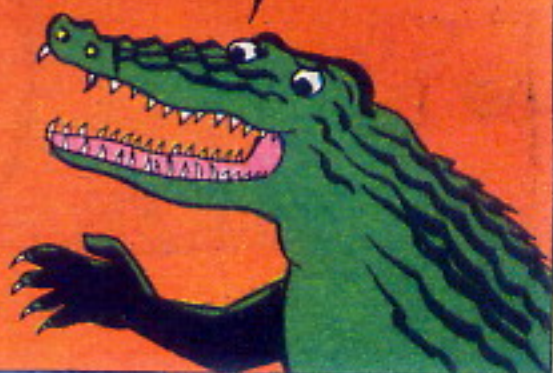




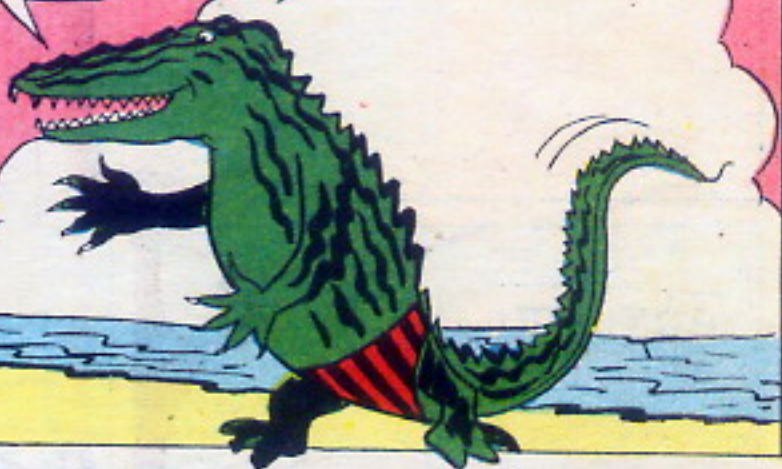
सिर्फ मेरी दुम ही ऐसी है जो मखमल की तरह मुलायम और घटाओं की तरह काली है।



अरे! फिजूल की बातें छोड़ो. अच्छी पूंछ वह जो उपयोगी हो- पेट भरे.



अपनी कांटेदार पूंछ से कई बार मैंने शिकार फांसे हैं.

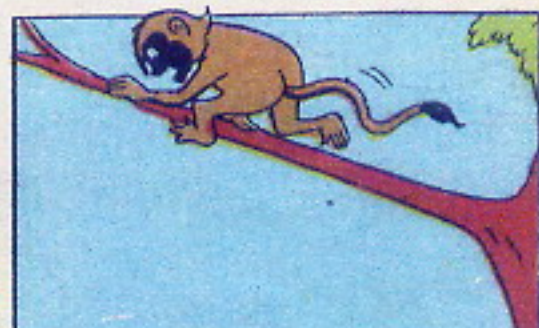


बस! काफी हो गया!



अनमोल चीज वही होती है जो सारे जहान में अद्वितीय हो!

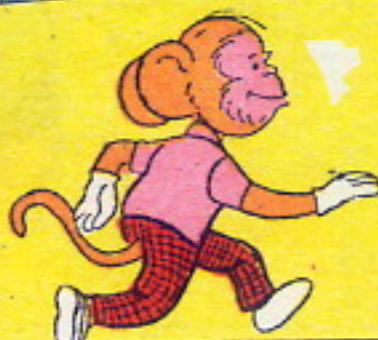






इमरती

अरे पिकलू !
सुनो धार !



कहाँ भागे जा रहे हो?



दोंदू ! मैं इमरती
लेने जा रहा हूँ .



इमरती ? वह तो
खाने में बड़ी लज़ीज़
होती है .



मैं रास्ते में खड़ा हो जाता हूँ . जब
पिकलू इमरती ले कर आएगा, कम से
कम आधी तो मुझे देगा .



P. 16

अरे ढोंढ़ ! गहां कयों खड़ा है ?

पिकलू इमरती लेने गया है.
मुझे भी आधी मिल जायगी.



इमरती ! वाह, वह तो मुझे
बड़ी अच्छी लगती है.



गोपा ! गहां कयों खड़े हो ?

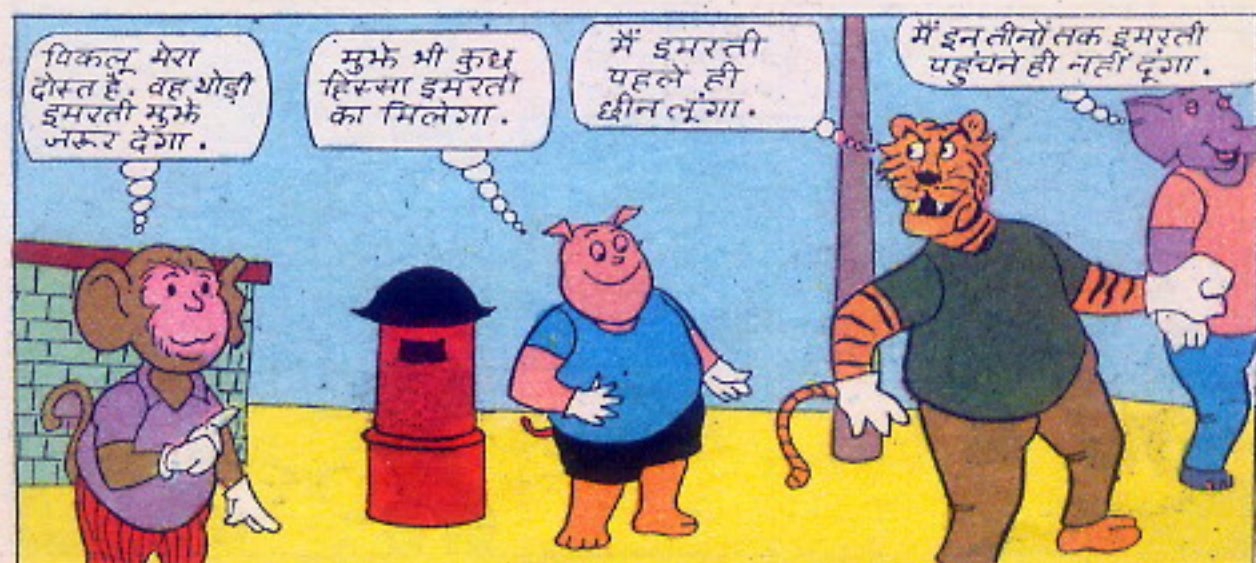
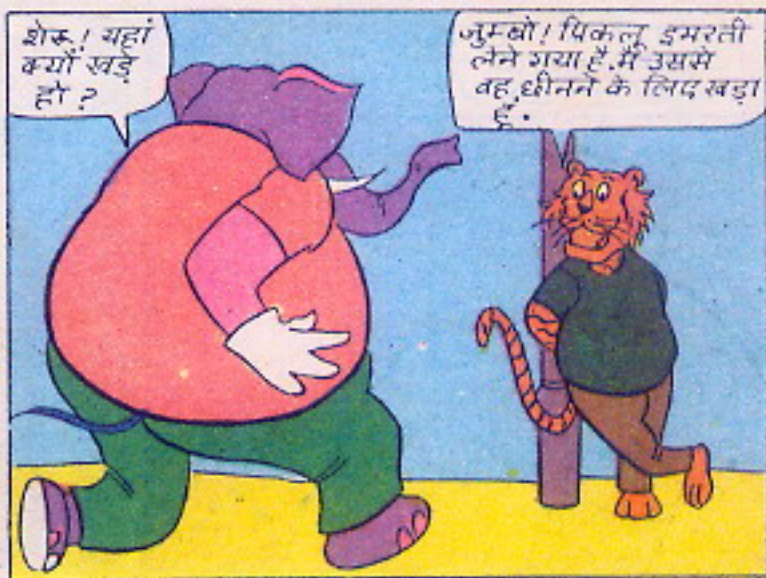


शेरू ! पिकलू इमरती लेने गया
है. जब वह लौट कर आयगा तो
मुझे भी उसमें से कुछ हिस्सा
मिल जायगा.

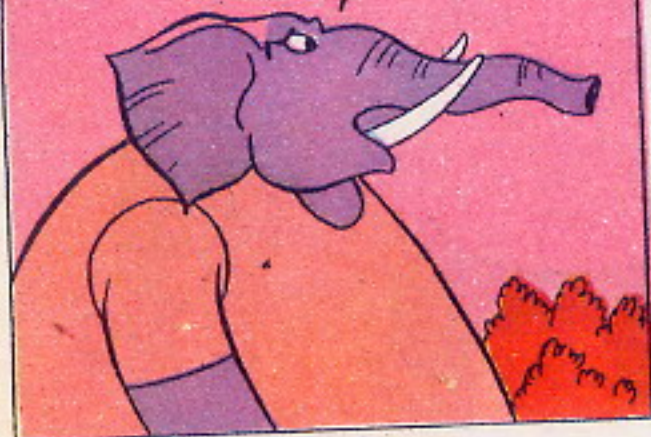


मैं आगे खड़ा हो जाता हूं. इससे
पहले कि इमरती इन तक पहुंचे,
मैं पिकलू से पहले ही छीन लूंगा.





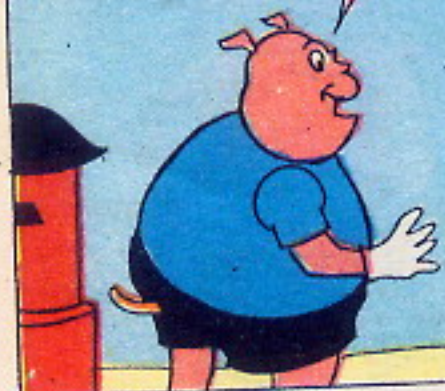
क्या बात है? अभी तक
पिकल इमरती
ले कर नहीं आया?



वह बड़ी ज्यादा देर
लगा रहा है.



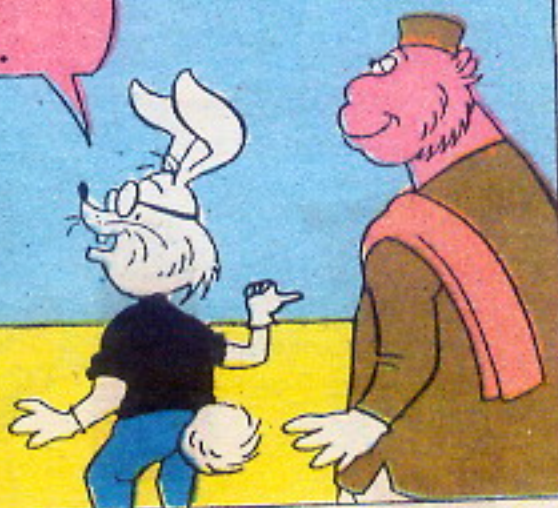
पिकल आ गया! मैं
उसे देख सकता हूँ.



लेकिन उसके हाथ में
कुछ नहीं है!



मैं अपने दोस्त
इमरतीलाल को
लेने गया था.





मच्छरों का भुण्ड



ओह! कमलखत मच्छरों का यह भुण्ड काफी देर से सिर पर मंडरा रहा है.



रम्पू दादा! यह मच्छरों का भुण्ड मेरा पीछा ही नहीं छोड़ रहा.



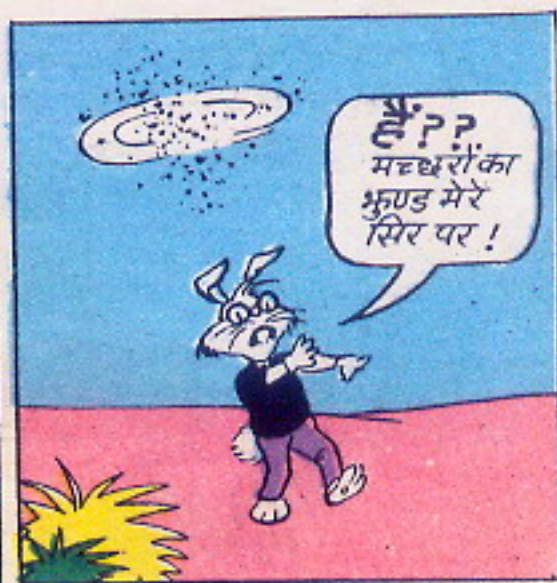
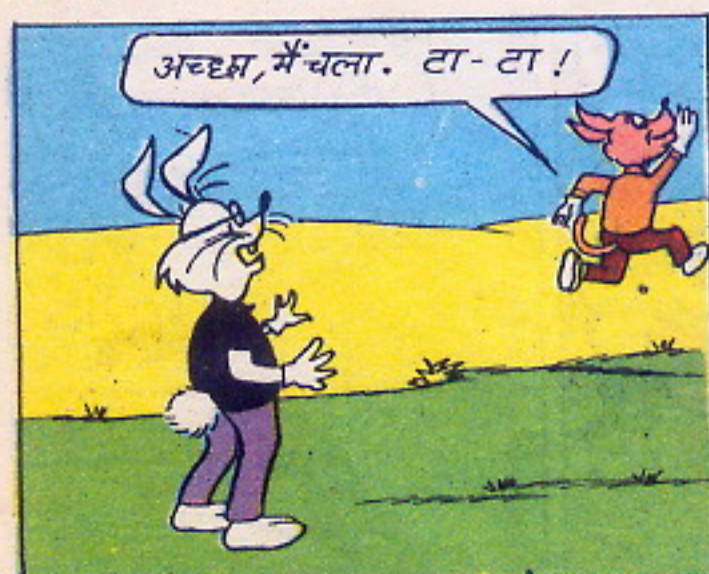
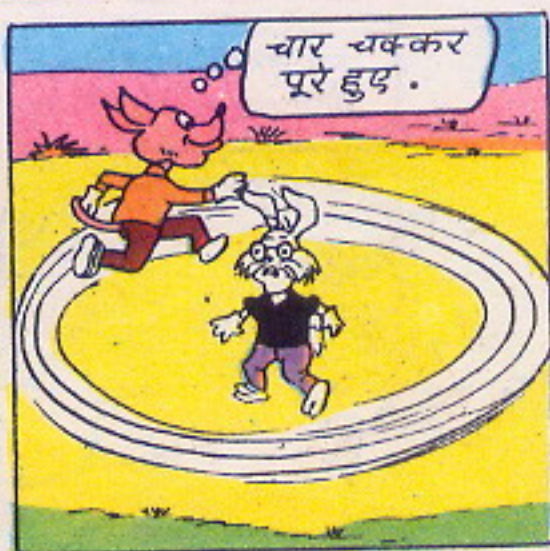
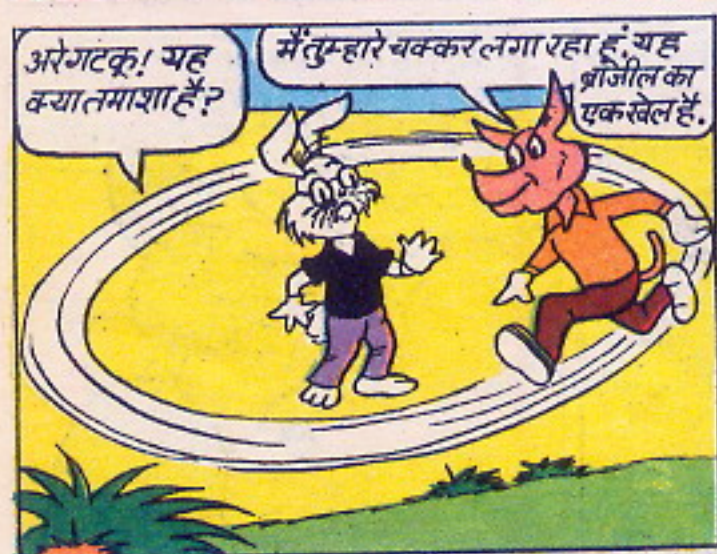
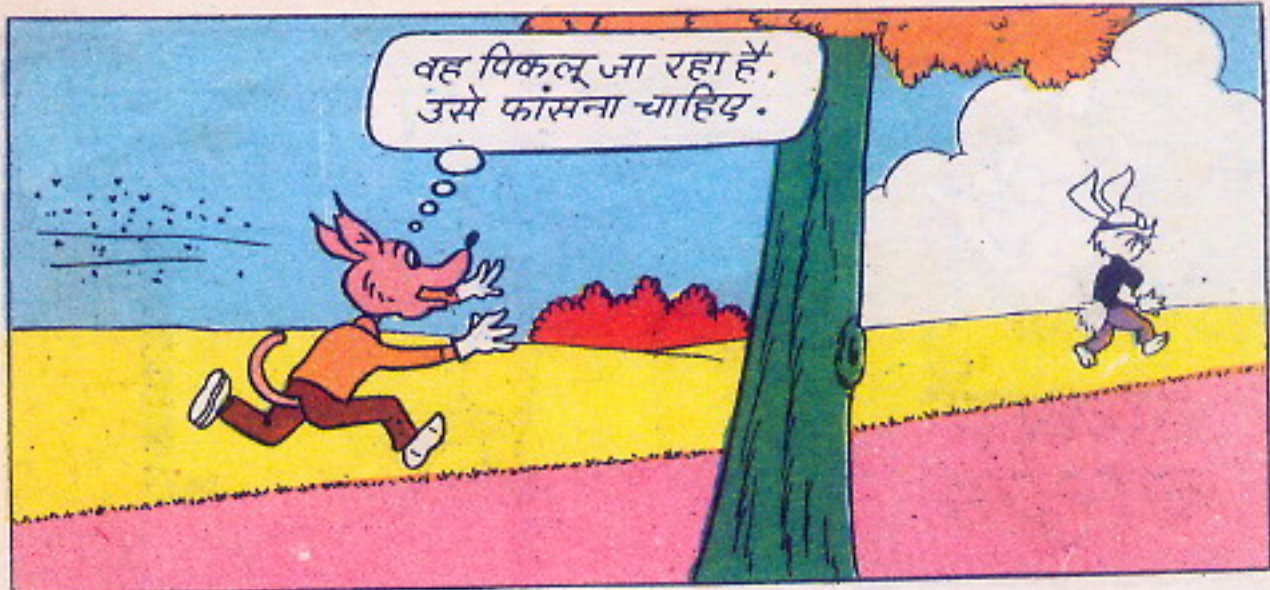
ब्राजील के लोग एक खेल करते हैं. जिसके सिर पर मच्छर मंडराते हैं वह किसी दूसरे के इर्द-गिर्द चार चक्कर लगाता है. मच्छर दूसरे के हवाले हो जाते हैं.



गटक! तुम भी ऐसा करो पर दूसरा आदमी मुझे मत बना लेना. समझे?



मैं कोशिश करता हूँ.



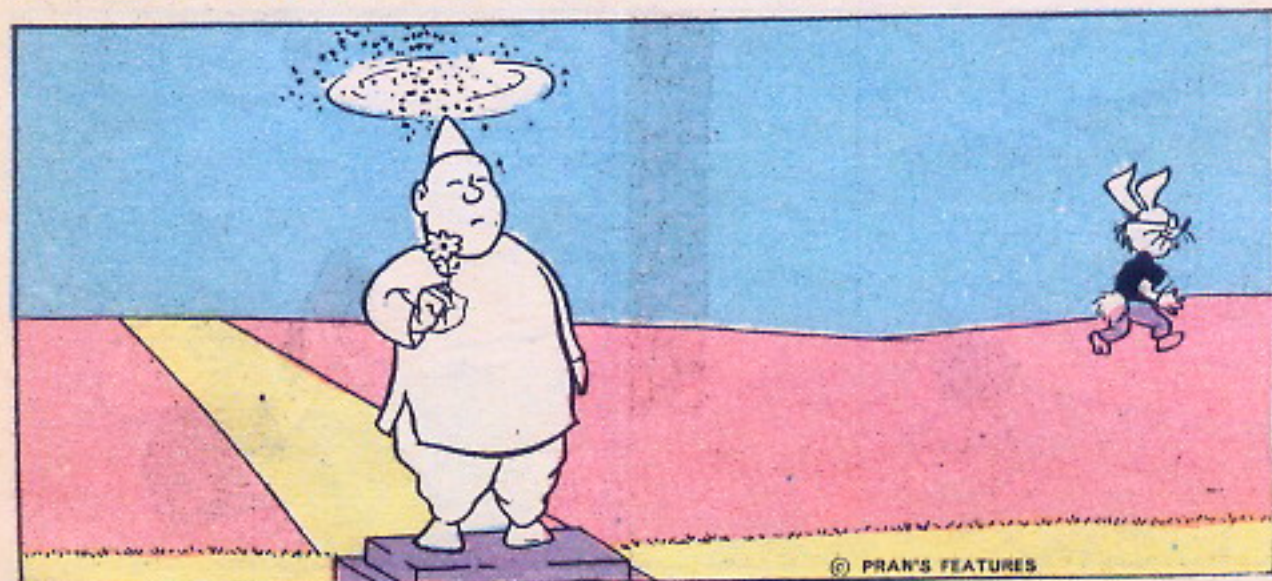
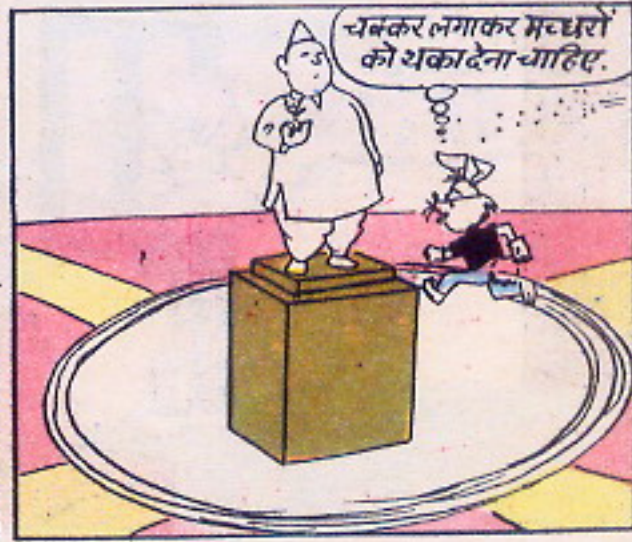
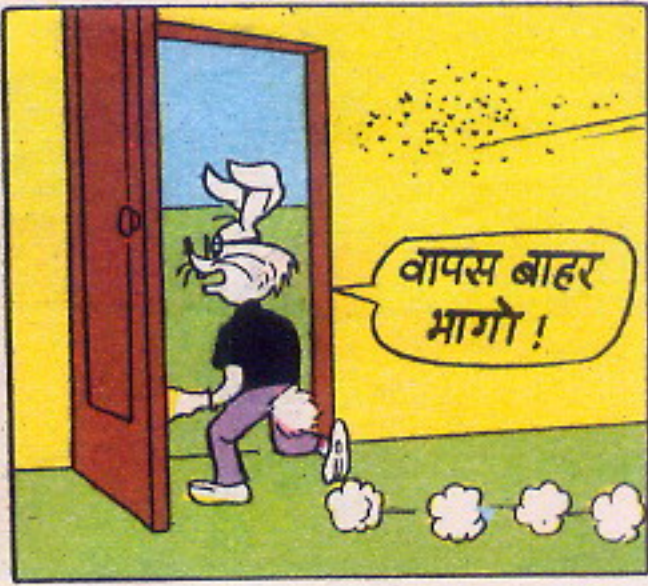
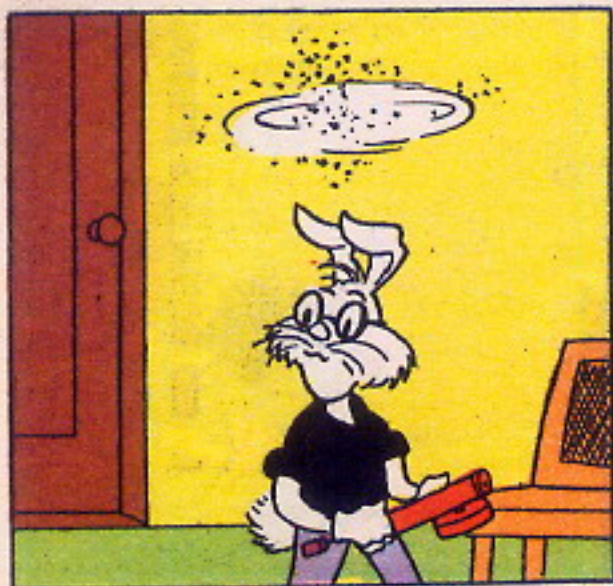
बाप रे, भागो!

गनीमत हैं, घर करीब ही हैं.

सारे दरवाजे खिड़कियां
बंद कर देनी
चाहिए. अब वे
कैसे अंदर घुसेंगे?

ये कमबख्त ऐसे
नहीं मानेंगे.
मच्छर मारने की
दवाई लाता हूं.

तुम्हारी
जगह
जहन्नूम
में ही है.





चंदे के रुपये

पिकलू! इस थैला में क्या है?

होंठू, चंदा इकट्ठा कर के लाया है. इस थैली में वे रुपये हैं.



कितने रुपये इकट्ठे हो गए चंदे में?

यही कोई दो तीन हजार.



गप्पू! हमारी किस्मत खुल गई.

हमारी किस्मत ऐसी तिजोरी में बंद है जिसकी चाबी खो चुकी है.



इसलिए रखचू! अब मुझे सबूत बाग मत दिखाओ.

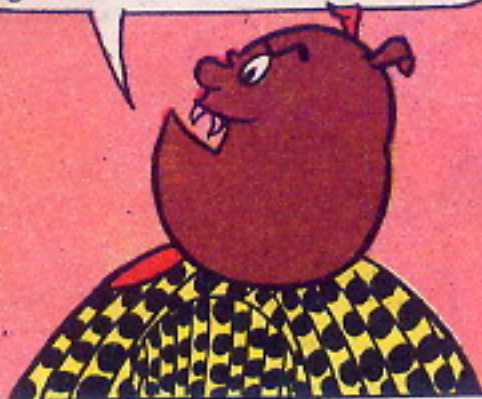


अरे! सच्ची खबर लाया हूं. पिकलू के पास चंदे के दो तीन हजार रुपये आ गए हैं. क्यों न हम उसके घर पर जा कर डाका डालें?



P-13

दो तीन हजार ! खच्छू, यह तो वू-
मचमुच बड़ी अच्छी खबर लाया है. जा,
उस खरगोश से वह रकम छीन ला.
कुछ दिन की अपनी रोटी तो चले,



लेकिन उस्ताद !
उस रकम में अपना
कितना हिस्सा होगा ?

बड़ा लालची हो गया है
अच्छा जा. फिफटी-
फिफटी बांट लेंगे.



यह ले मेरी बंदूक.
अब देरी मत कर.



हो ! हो ! अगर तीन हजार की रकम हाथ
लगी तो मैं गप्पू को दो हजार ही बताऊंगा.
इस तरह मुझे गप्पू से दोगुने पैसे मिलेंगे.

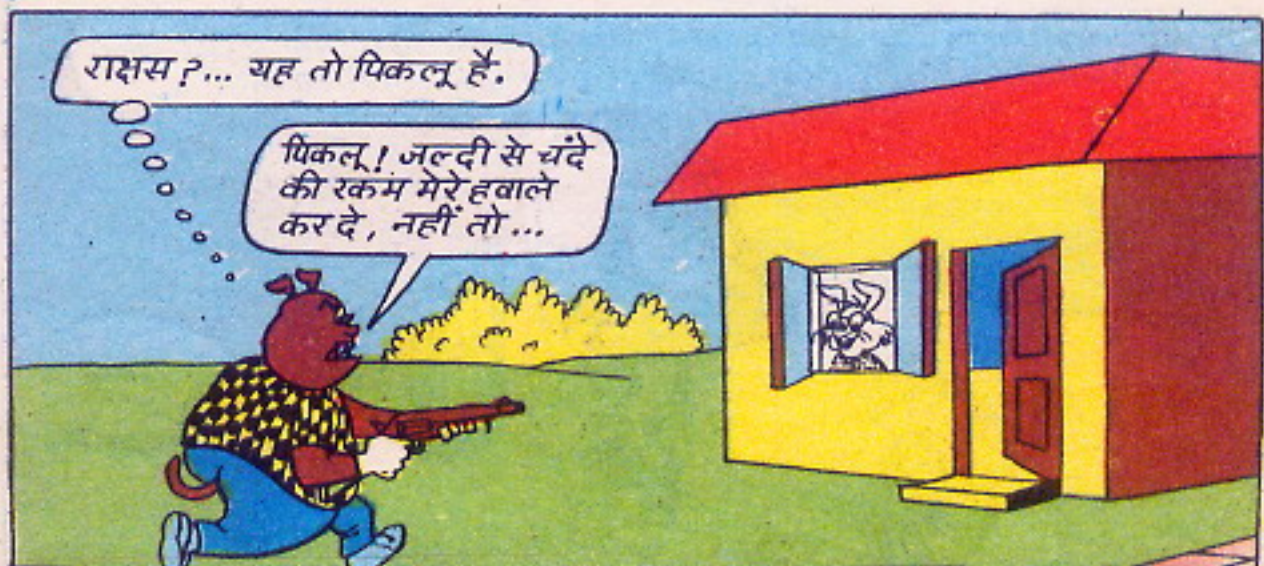
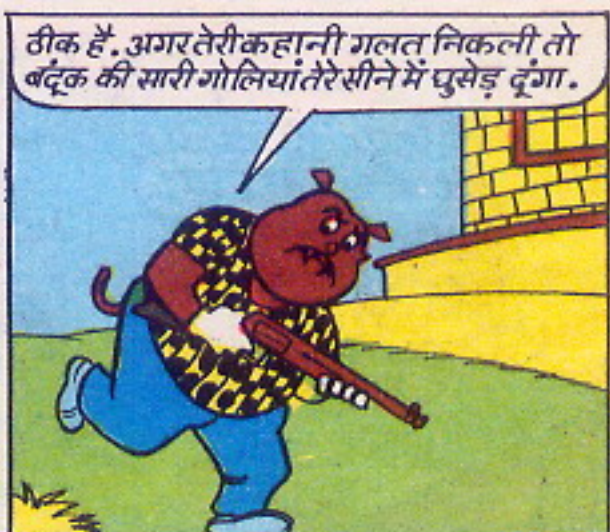


वह रहा पिकलू का घर.
मैं उसे अचानक
दबोच लूंगा.



बाप रे !
राक्षस !





चंदे की सारी रकम
खजांची के पास है.
जाकर उससे ले लो.

बाप रे! राक्षस!
खच्ची ठीक ही कह रहा था.

भागो!

हा! हा!

अरे! आखिर वह
हैं कौन, पिकलू?

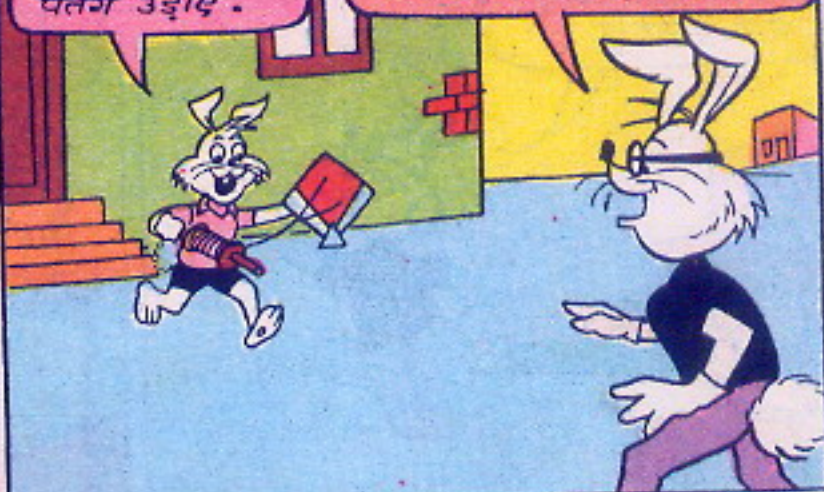
यह रामलीला के लिए कुम्भकरण का सिर है. बाकी धड़ वह रहा. जो दो-तीन
हजार रुपया चंदा इकट्ठा किया है, उससे दशहरे पर हम रामलीला करेंगे.



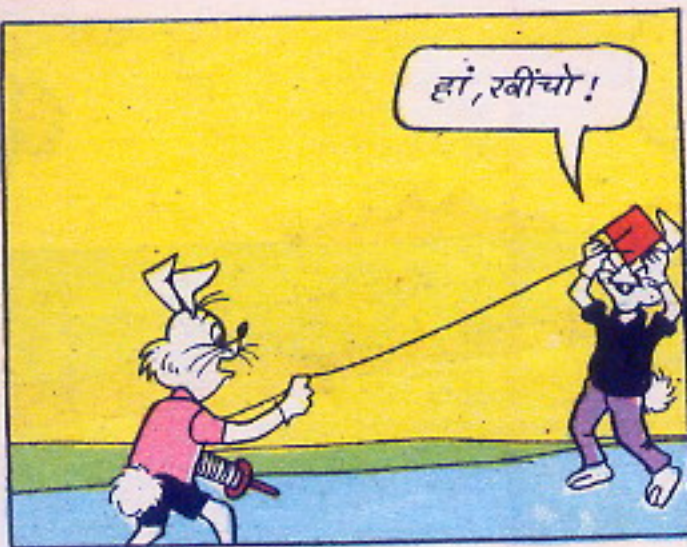
पतंग

पापाजी! आओ,
पतंग उड़ाएं.

ठीक है लुड्कू. आज हवा काफी है.
पतंग आसमान में खूब ऊंचे जाएगी.



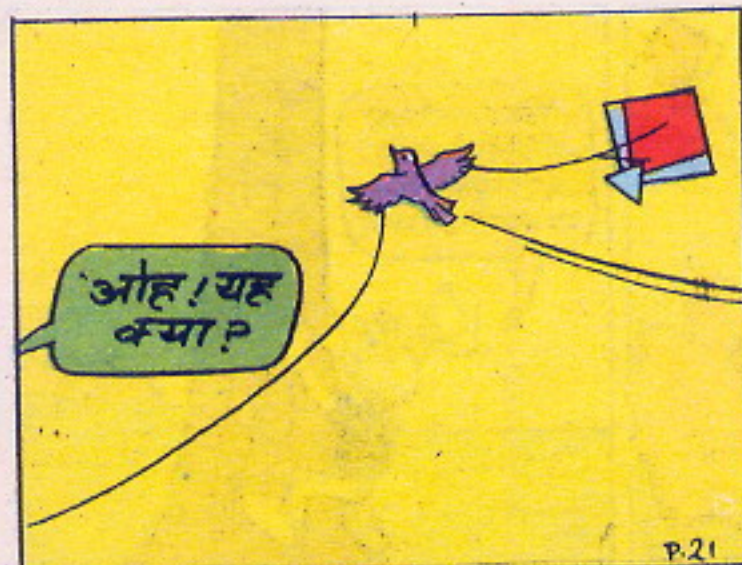
हां, रबीचो!



वाह! आज मेरी
पतंग बादलों से
भी ऊपर जाएगी.



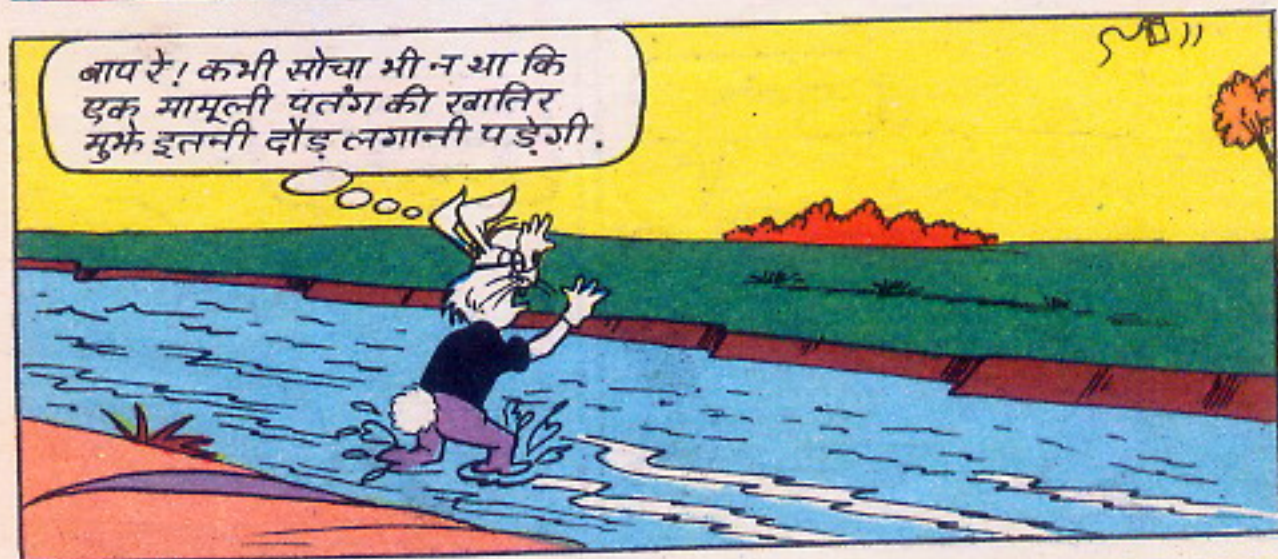
ओह! यह
क्या?

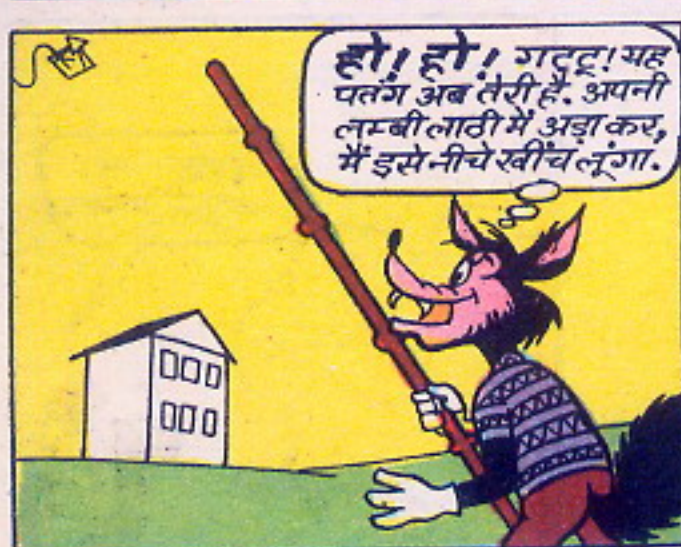
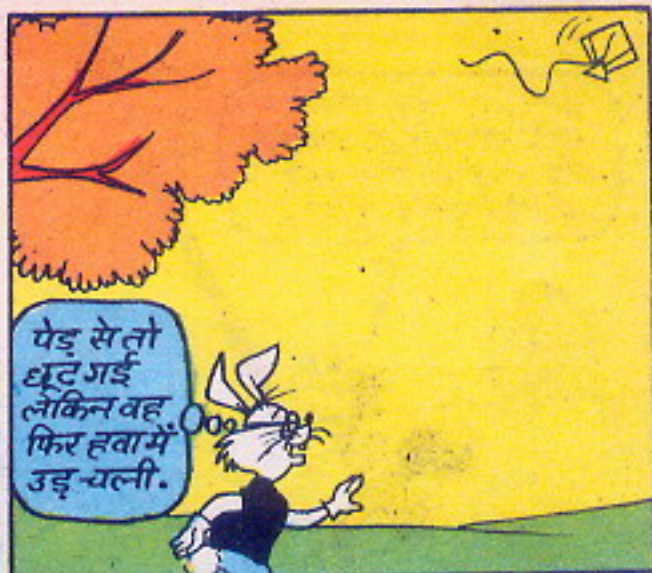


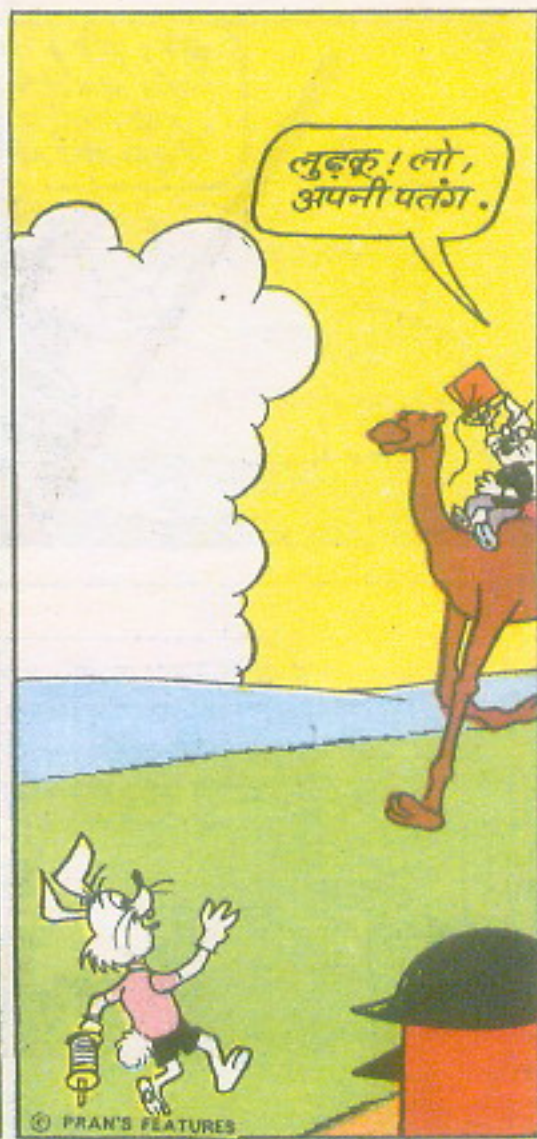
मेरी
पतंग!



P.21

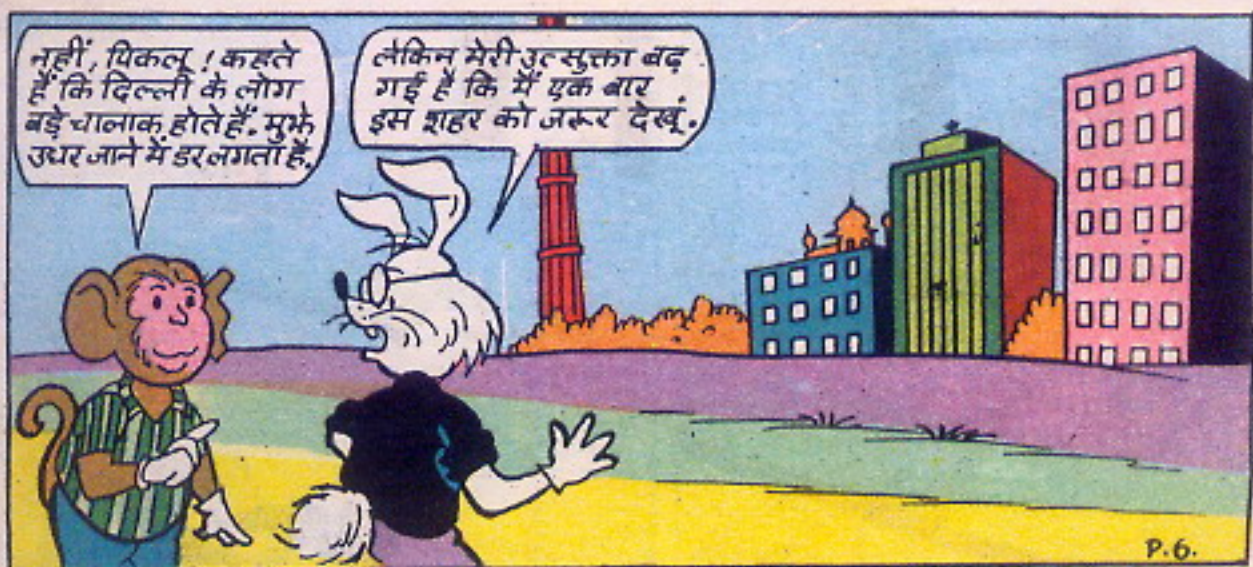
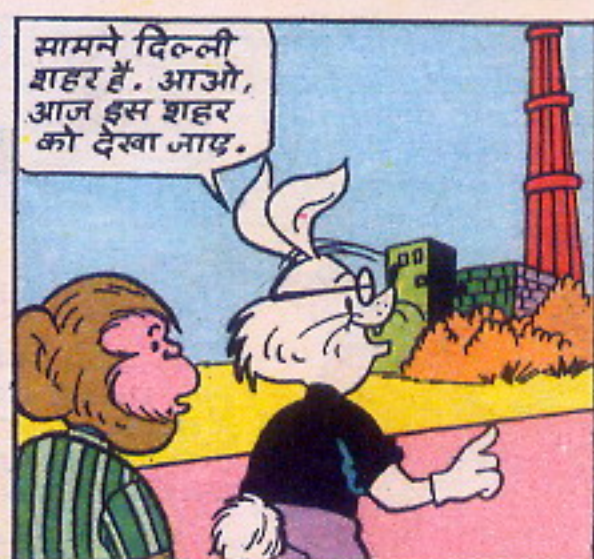
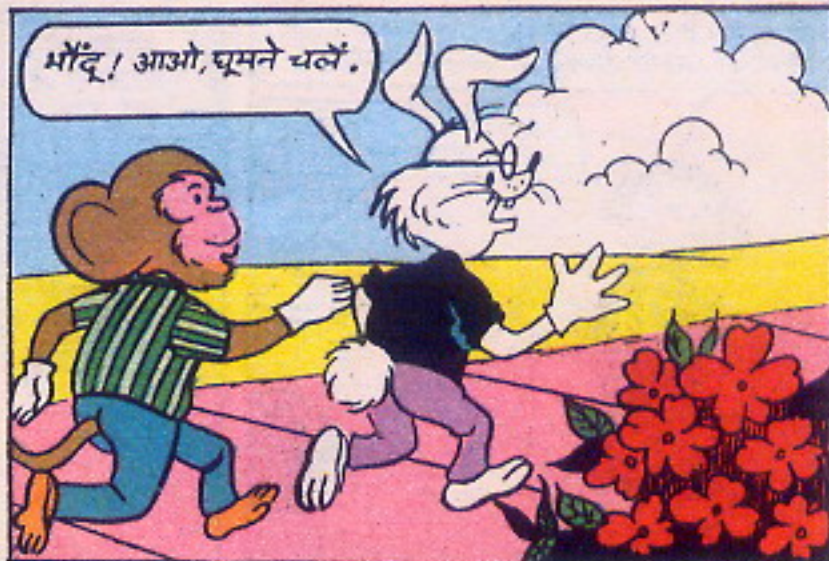








चोर



पिकलू ! मेरा कहा मानो, घर वापस चलो,
दिल्ली जाना खतरे से खाली नहीं.

अरे भौंद ! तू तो
बड़ा डरपोक है.



ठीक है, तुम
दिल्ली जाओ. मैं
तो घर चला



वाह ! क्या ऊंची-ऊंची इमारतें हैं !

लोटन उड़ता द ! यह
स्वर्गोश तो बोलता है.



अगर हम इसे पकड़
लें तो बच्चों को तमाशा
दिखा कर काफी पैसा कमा
सकते हैं, मैं आया अभी.



हा ! हा !

अरे ! वह बदमाश
मुझे पकड़ने
आ रहा है.

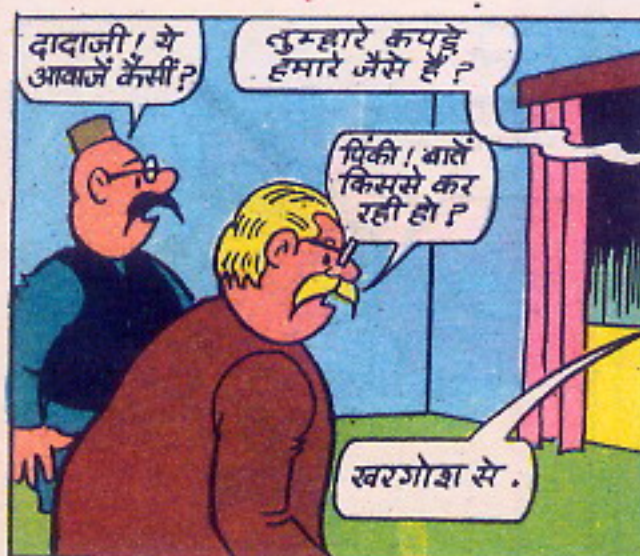


खिड़की खुली
है. इस घर
में शरण
लेनी चाहिए.

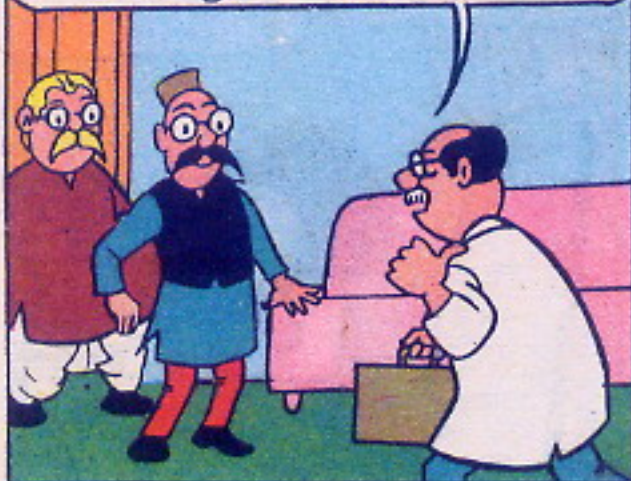


आखिर कब तक
उस घर में छिपा रहेगा
जब भी बाहर निकलेगा
मैं उस स्वर्गोश को
दबोच लूंगा.





उस कमरे में एक खरगोश है जो सचमुच बोलता है.



भूपटजी! यह डाक्टर भी गया काम से.

भागो! यह डाक्टर पागलपन में कहीं हमें माफिया का इंजेक्शन न लगा दे.



अरे! यह बदमाश लोटन यहां क्या कर रहा है? मुझे इसकी कई दिनों से तलाश थी.



चलो!

मगर थानेदार साँब!

चुप!



यही मौका है निकल भागने का.



अरे भौंद! पता है दिल्ली में मैं पिकी से मिला.

लगता है पिकलू का दिमाग फिर गया है. पिकी तो कामिक्स कर करेक्टर है.

